B.A (Sanskrit Hons) part-I

paper- I

- कुमारसम्भवम् (पार्वती तथा ब्रह्मचारी का संवाद)

By

Dr. Sanjay Kumar Chaubey

(Assistant professor)

Dept. of Sanskrit

H.D. Jain college, Ara

Scanned by CamScanner

वहां उपस्थित हुए थे। वहां पर पूर्ण होता है ...

4.8 कुमारसम्भव पंचम सर्ग में पार्वती तथा ब्रह्मचारी का संवाद –

कुमारसम्भव के पंचम सर्ग में महाकवि कालिदास ने तपस्या में संलग्न भगवती पार्वती तथा ब्रह्मचारिवेषधारी शिव के मध्य रोचक संवाद को प्रस्तुत किया है।

कठोर तपस्या करती भगवती पार्वती की परीक्षा लेने ब्रह्मचारी का वेष धारण कर शिव उपस्थित होते हैं। वे भगवती पार्वती की उनके प्रति अनन्य भाव से प्रीति की परीक्षा लेना चाहते थे। समान रूपसम्पत्ति से युक्त उस ब्रह्मचारी का पार्वती स्वागत करती हैं। ब्रह्मचारी पहले पार्वती की तपस्या की प्रशंसा करता हुआ पूछता है कि तपस्या के निमित्त समिधा, कुश, जल आदि उपलब्ध हैं या नहीं? पार्वती शरीर की रक्षा करते हुए अपनी शक्ति के अनुरूप ही तपस्या में संलग्न है या नहीं?

–

Scanned by CamScanner

अपि क्रियार्थं सुलभं समित्कुशं जलान्यपि स्नानविधिक्षमाणि ते ।

अपि स्वशक्त्या तपसि प्रवर्त्तसे शरीरमाद्यं खलु धर्म्मसाधनम् ।। 2.33।।

तपोवन के वृक्षों के किसलय भी लालिमा का परित्याग कर पार्वती के अधरोष्ठ के समान सफेद हो गए हैं। अपनी दृष्टि से पार्वती का अनुकरण करने वाले तथा हाथों से कुश को प्रेमपूर्वक छीन भक्षण करने वाले हिरणों से पार्वती का मन बहला रहता है। रूपसौन्दर्य पापाचरण के निमित्त नहीं होता ऐसा पार्वती की मुनिवृत्तिता को देखकर प्रमाणित हो जाता है। पार्वती का सद्वृत्त तपस्वियों के लिए भी अनुकरणीय है–

तथा हि ते शीलमुदारदर्शने तपस्विनामप्युपदेशतां गतम्।। 2.36।।

हिमालय पर्वत स्वर्ग से अवतरित गंगा की धारा से उतना पवित्र नहीं हो रहा था जितना पार्वती की तपस्या से। अर्थ तथा काम पुरुषार्थ की अपेक्षा धर्म की प्रबलता प्रमाणित होती है पार्वती की तपस्या को देखने से। शिव कहते हैं कि वे पार्वती के लिए पराए नहीं, क्योंकि सज्जनों के साथ मैत्री सात पदों के सम्भाषण से ही हो जाती है।

शिव विनम्रतापूर्वक पार्वती से तपस्या का कारण पूछते हैं। वे जानना चाहते थे कि ब्रह्मा के आदिकुल में उत्पन्न, तीनों लोकों के सौन्दर्य से सम्पन्न रूपसम्पत्ति वाली पार्वती समस्त ऐश्वर्यों से युक्त युवावस्था में तपस्या में क्यों सलग्न थी –

कुले प्रसूतिः प्रथमस्य वेधसस्त्रिलोकसौन्दर्यमिवोदितं वपुः ।

अमृग्यमैश्वर्यसुखं नवं वयस्तपःफलं स्यात् किमतः परं वद ।। 2.41।।

असहनीय कष्ट के कारण या पिता के घर अपमान के कारण पार्वती तपस्या में संलग्न है ऐसा प्रतीत नहीं होता। शिव के अनुसार पार्वती उस रत्न के समान है जिसे खोजा नहीं जाता –

न रत्नमन्विष्यति मृग्यते हि तत्।। 2.45।।

ब्रह्मचारी जानना चाहते हैं कि पार्वती किस युवक की कामना से तपस्या में प्रवृत्त हुई हैं? पार्वती पास खड़ी सखी को उत्तर देने के लिए कहती हैं। सखी के अनुसार पार्वती ने पिनाकपाणि शिव को अपना पति चुना है, जिन्होंने समस्त देवताओं के सामर्थ्य को तिरस्कृत करते हुए कामदेव को भस्मसात् कर दिया था –

अरूपहार्यं मदनस्य निग्रहात् पिनाकपाणिं पतिमाप्तुमिच्छति ।। 2.53।।

सखी कामदेव के भस्म होने सम्बन्धी सम्पूर्ण वृत्तान्त से ब्रह्मचारी को परिचित कराती है। कामदेव के भस्म होने के अनन्तर पार्वती अनन्यभाव से शिव में आसक्त हो पिता की आज्ञा प्राप्त कर तपस्या में संलग्न हुई। पार्वती द्वारा स्वयं लगाए गए वृक्षों में भी फल लग गए परन्तु शिवविषयक उसका मनोरथ अंकुरित होता नहीं दिखता। अश्रुपूरित नेत्रों से सखियों द्वारा देखी जाती हुई पार्वती को ग्रीष्म से सूखी भूमि को वर्षा से इन्द्र के सदृश भगवान् शंकर कब अनुगृहीत करेंगे यह विदित नहीं था।

Scanned by CamScanner

पार्वती की इस निष्ठा के विषय में ब्रह्मचारी सन्देह व्यक्त करते हैं तो अक्षमाला फेरती हुई पार्वती कहती हैं कि वे वस्तुतः उच्च पद की अभिलाषा रखती हैं और यह भी मानती हैं कि उस उच्च पद को प्राप्त करने का एक ही साधन है 'तप'। पार्वती मानती हैं कि मनोरथों की प्राप्ति असंभव नहीं –

यथा श्रुतं वेदविदाम्वर! त्वया जनोऽयमुच्चैः–पदलङ्घनोत्सुकः ।
तपः किलेदं तदवाप्तिसाधनं मनोरथानामगतिर्न विद्यते ।। 2.64।।

पार्वती के शिव को प्राप्त करने सम्बन्धी आग्रह को जानकर ब्रह्मचारी कहता है कि वह शिव से परिचित है भलीभांति। शिव अमंगल पदार्थों के प्रति आसक्ति रखते हैं, अतः वह पार्वती के शिव से विवाह के आग्रह का समर्थन नहीं कर सकता। पार्वती तुच्छ वस्तु को प्राप्त करने के लिए प्रवृत्त हुई है, क्योंकि विवाह के अनन्तर कंकण युक्त उनका हाथ कैसे पकड़ेगा शिव के सांपों से लिपटे हाथ को। पार्वती का सुन्दर दुकूल तथा शंकर का रक्त की बूंदों से सना गजचर्म कैसे एक साथ रह सकते हैं। शिव से विवाह के अनन्तर पार्वती के लाक्षारस से चिह्नित पुष्पों पर चलने वाले चरण कैसे पड़ेंगे मृत प्रेतों से व्याप्त श्मशानभूमि में। पार्वती अपने स्तनों पर हरिचन्दन लगाती हैं तथा शिव अपने वक्ष पर चिताभस्म। दोनों का मिलन अनुचित है। विवाह पश्चात् गजराज पर चढ़ने योग्य पार्वती बूढ़े बैल पर सवार होगी, यह लोक के लिए परिहास का विषय होगा। शिव की प्राप्ति की कामना पहले तो केवल चन्द्रलेखा में थी परन्तु आज पार्वती के द्वारा भी उनकी कामना किए जाने से वह भी शोचनीय अवस्था को प्राप्त हो गयी है।

ब्रह्मचारी कहता है कि शिव में श्रेष्ठ वर बनने के एक भी लक्षण नहीं है। उत्तम वर में उच्चकुल, स्वस्थशरीर तथा धन–सम्पत्ति देखी जाती है, परन्तु शिव जी में ये तीनों ही नहीं हैं। उनके कुल का पता नहीं, शरीर में तीन नेत्र हैं तथा श्मशान में दिगम्बर हो घूमने से धनसम्पत्ति का अभाव अपने आप प्रमाणित हो जाता है –

वपुर् विरूपाक्षमलक्ष्यजन्मता दिगम्बरत्वेन निवेदितं वसु ।
वरेषु यद् बालमृगाक्षि! मृग्यते तदस्ति किं व्यस्तमपि त्रिलोचने ।। 5.72।।

इसलिए पार्वती को इस प्रकार के अमंगलकारी शिव से अपना मन वापस कर लेना चाहिए। कहाँ पार्वती और कहाँ इस प्रकार के शिव। श्मशान में लगे यूप की वैदिक विधि से पूजा नहीं की जाती। शिव के प्रति तिरस्कारपूर्ण वचनों को सुनकर पार्वती क्रोधित हो जाती हैं। प्रकट हो रहा था उनका क्रोध उनके काँपते होंठों से, अपांगभाग में रक्त नेत्रों से तथा भ्रुकुटियों के टेढ़ेपन से।

पार्वती ने ब्रह्मचारी से कहा कि वह वस्तुतः शिव को नहीं जानता। मूर्ख लोग महात्माओं के अलौकिक तथा दुर्बोध चरित की आलोचना करते हैं। शिव के यथार्थ स्वरूप को सभी नहीं जान सकते, क्योंकि शिव निर्धन होकर भी सभी सम्पत्तियों के कारण हैं। श्मशान में रहते हुए भी तीनों लोकों के स्वामी हैं, आकार से भयंकर होकर भी कल्याणकारी हैं –

अकिंचनः सन् प्रभवः स संपदां, त्रिलोकनाथः पितृसद्मगोचरः ।

Scanned by CamScanner

स भीमरूपः शिव इत्युदीर्यते न सन्ति याथार्थ्यविदः पिनाकिनः ।। 5.77।।

कोई फर्क नहीं पड़ता यदि शिव का शरीर आभूषणों से विभूषित हो या सर्पों से, हाथी के चर्म से ढका हो या फिर रेशमी वस्त्र से, सिर में कपाल धारण किए हो या चन्द्रकला। इनसे शिव को नहीं समझा जा सकता। शिव के शरीर का स्पर्श प्राप्त कर पवित्र हुई चिताभस्म को भी देवता अपने मस्तक से धारण करते है। दिग्गज पर आरूढ़ रहने वाला इन्द्र भी बैल पर विराजमान् शिव के चरणों में अपने मस्तक को रखता है। तुम पतित आत्मा वाले हो अतः शिव के विषय में निन्दा वचन बोल रहे हो। जो ब्रह्मा का भी कारण है उसका कारण होने की योग्यता किसमें हो सकती है।

विवाद करने से लाभ नहीं। तुमने शिव के विषय में सही ही सुना है। मेरा चित्त उनमें संलग्न है अतः मुझे लोकनिन्दा का भय नहीं।

पार्वती के ऐसा कहने पर ब्रह्मचारी शिव की निन्दा में पुनः कुछ बोलना चाहता है कि पार्वती अपनी सखी के माध्यम से उसको ऐसा करने से रुकवा देती है। पार्वती के अनुसार जो श्रेष्ठ व्यक्तियों की निन्दा करता है न केवल वह पाप का भागी बनता है अपितु जो उसको सुनता है वह भी पाप का भागी बनता है –

न केवलं यो महतोऽपभाषते शृणोति तस्मादपि यः स पापभाक् ।। 5.83।।

ऐसा कह पार्वती उस स्थान को ही छोड़कर अन्यत्र जाने के लिए उद्यत होती है कि ब्रह्मचारी वेषधारी शिव स्वयं को प्रकट कर पार्वती को रोक लेते हैं। उस स्थिति में आगे बढ़ने के लिए एक पैर को उठाए हुए पार्वती उस तीव्र प्रवाह से युक्त नदी के समान दिख रही थी जो पर्वत के विशाल शिलाखण्ड के द्वारा रोकी गयी हो और चाह कर भी आगे नहीं बढ़ पाती हो। शिव पार्वती से कहते हैं– 'मनोहर अंगों वाली पार्वती! आज से मैं तुम्हारे तप के द्वारा खरीदा गया तुम्हारा दास हूँ।' शिव के ऐसा कहते ही पार्वती का तपस्या से उत्पन्न सम्पूर्ण सन्ताप नष्ट हो गया। तपस्या के फल की प्राप्ति हो जाने से तपस्या जनित कष्ट निश्चित ही स्वतः समाप्त हो जाता है – **अद्यप्रभृत्यवनतांगि! तवास्मि दासः क्रीतस्तपोभिरिति वादिनि चन्द्रमौलौ ।**

अह्नाय सा नियमजं क्लममुत्ससर्ज क्लेशः फलेन हि पुनर्नवतां विधत्ते ।। 5.86।।

पार्वतीतपःफलोदय नामक इस पंचम सर्ग में यही है पार्वती और ब्रह्मचारी का वेष धारण कर उपस्थित हुए शिव के मध्य संवाद का संक्षिप्त विवरण।

(नोट – पंचम सर्ग के मूल पद्यों का अध्ययन करते हुए विद्यार्थी चाहें तो इसका विस्तार से अध्ययन कर सकते हैं। उपर्युक्त विवरण सम्पूर्ण संवाद का सार मात्र है।)

Scanned by CamScanner